जन्म-शताब्दी वर्ष के अवसर पर

मनुष्य की सत्ता की गरिमा, प्रकृति, प्रेम और जन मुक्ति संघर्षों का महाकवि पाब्लो नेरूदा

इन दिनों पूरी दुनिया के विभिन्न हिस्सों में स्पेनिश भाषा के महाकवि पाब्लो नेरूदा (1904-1973) के जन्म-शताब्दी वर्ष के अवसर पर आयोजनों का सिलसिला जारी है। चीले में पैदा हुए पाब्लो नेरूदा न केवल पूरे लातिन अमेरिकी कविता के महान कवि माने जाते हैं, बल्कि उनका सृजन विश्व-कविता की बहुमूल्य विरासत का हिस्सा माना जाता है। पाब्लो नेरूदा की कविता जनता के जीवन की अतल गहराइयों से ऊपर उठी कविता है, वह आम लोगों के प्यार और संघर्ष की, आशा और निराशा की सघन अभिव्यक्ति है और समूची बीसवीं शताब्दी के महान संघर्षों के गर्भ से उपजी कविता है।

नेरूदा बन्द अध्ययनकक्षों के प्राणी नहीं थे। जनता के जीवन और संघर्षों में भागीदारी उनकी कविता की शक्ति है। वे सच्चे अर्थों में जनता के कवि थे नेरूदा की आरंभिक प्रेम-कविताएँ मानवीय गरिमा की अभ्यर्थना और अदम्य जिजीविषा की कविताओं के रूप में पूरे लातिन अमेरिका से लेकर स्पेन तक में प्रशंसित हुई। निकारागुआ के महान कवि रूबेन दारियो और अमेरिकी कवि वाल्ट ह्विटमैन की परम्परा को आगे विस्तार देते हुए नेरूदा ने आधुनिकतावाद और अवांगार्द कविता के एक विशिष्ट लातिनी अमेरिकी संस्करण का निर्माण किया। इस नयी साहित्यिक शैली ने आत्मिक जगत की नई गहराइयों को उद्घाटित करने के साथ ही बीसवीं शताब्दी के महाकाव्यात्मकजन मुक्ति संघर्षों की युयुत्सा और नये सामाजिक यथार्थ को अनूठी और प्रभावी अभिव्यक्ति दी। लातिन अमेरिकी देशों में जारी साम्राज्यवाद और तानाशाही-विरोधी जन मुक्ति-संघर्षों ने प्रकृति और प्रेम के कवि को इतिहास-बोध से लैस एक अनूठे राजनीतिक कवि में ढाल दिया।

स्पेनी गृहयुद्ध में (1936-1939)में फ्रांको की फासिस्ट सत्ता के विरूद्ध क्रान्तिकारी संघर्ष में भागीदारी ने नेरूदा की कविता को नई ऊर्जस्विता से भर दिया। नात्सी फौजों के विरुद्ध सोवियत जनता के महान संघर्ष ने उन्हें मुक्तिकामी जनता की अजेयता और समाजवाद की शक्ति के प्रति गहरे विश्वास से भर दिया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान सोवियत जनता के शौर्यपूर्ण प्रतिरोध-संघर्ष को विषयवस्तु बनाकर उन्होंने कई बेजोड़ राजनीतिक कविताएँ लिखी। नेरूदा अब एक कम्युनिस्ट हो चुके थे और अन्तिम साँस तक उनकी यह वैचारिक प्रतिबद्धता अक्षुण्ण बनी रही।

कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य के रूप में पाब्लों ने विदेला की तानाशाही के दौरान खदान मजदूरों के बीच काम किया और सत्ता के कोप के चलते उन्हें देश भी छोड़ना पड़ा। 1973 में राष्ट्रपति अलेन्दे की हत्या और तख्तापलट के बाद 11 सितम्बर को सैनिक तानाशाह पिनोशे सत्तारूढ़ हुआ और इसके ठीक बारह दिनों बाद नेरूदा का निधन हुआ। उनको श्रद्धांजलि देने के लिए आयोजित जनसभा स्वत:स्फूर्त ढंग से सैनिक तानाशाही के विरुद्ध प्रतिरोध सभा में तबदील हो गयी। उनकी कविताओं पर प्रतिबन्ध और उनके घर को स्मारक बनने देने से रोकने की हर चन्द कोशिश के बावजूद पिनोशे की सत्ता के विरूद्ध उनकी कविताएँ जनता के हाथों में हथियार का काम करती रहीं।

पाब्लो नेरूदा ने कला और ऐतिहासिक परिवर्तन की शक्तियों के बीच समान रूप से मौजूद तत्वों की शिनाख्त की और एक ऐसे सौन्दर्यशास्त्र का निर्माण किया जो उन शक्तियों के पक्ष में खड़ा था। वे प्रेम, प्रकृति, जिजीविषा, युयुत्सा, लोकस्मृतियों और भविष्य-स्वप्नों का संश्लेषण करने वाले प्रयोगधर्मा कवि थे। वे कवि होने के साथ ही एक राजनीतिक कार्यकर्ता और एक सांस्कृतिक संगठनकर्ता भी थे। जनता का जीवन और उसके संघर्ष कविता की शक्ति के अक्षय स्रोत थे। कलावादियों द्वारा अपनाये जाने और विरूपीकरण की तमाम कोशिशों के बावजूद पाब्लो की कविता जनता की विरासत बनी रहेगी और दुनिया भर के परिवर्तनकामी युवा उससे बेइन्तहां प्यार करते रहेंगे।